उपलब्धि

ग्लाइडर्स इंडिया लिमिटेड ने शुरू किया काम, अभी तक छह से 12 किलो भार वाले ड्रोनों के लिए बनाए गए रेस्क्यू पैराशूट

कानपुर में 50-100 किलो भार वाले ड्रोनों के लिए बनेंगे रेस्क्यू पैराशूट

अमित अवस्थी

कानपुर। ग्लाइडर्स इंडिया लिमिटेड (जीआईएल) आने वाले कुछ समय में 50-100 किलो ग्राम भार वाले ड्रोनों के रेस्क्यू के लिए ड्रोन रेस्क्यू पैराशूट बनाएगी। इस संबंध में काम शुरू हो गया है। कंपनी अभी तक छह से 12 किलोग्राम भार वाले ड्रोनों के लिए रेस्क्यू पैराशूट बना चुकी है।

वहीं, कंपनी ने पहली बार दक्षिण अफ्रीकी दो देशों को मैन कैरिंग पैराशूटों का निर्यात किया है। इन देशों को 30-30 पैराशूट दिए गए हैं। ड्रोन मानव रहित हवाई वाहन (यूएवी) होते हैं, जो रिमोट के जरिये संचालित होते हैं। ड्रोन का उपयोग लगातार बढ़ता जा रहा है।

ड्रोन का उपयोग लॉजिस्टिक्स, सैन्य साजोसामान ले जाने, नागरिक सुविधाओं, वन्य जीव सर्वेक्षण, रिमोट सेंसिंग, सर्वेक्षण, स्मार्ट कृषि, आपदा सर्वेक्षण आदि के लिए किया जाता है। सैन्य निगरानी और टोही (जासूसी) के रूप में इसका प्रयोग तेजी से बढ़ा है। अक्सर उड़ान के दौरान बिजली सर्किट विफलता, संपर्क टूटने से ड्रोनों के जमीन पर गिरकर क्षतिग्रस्त होने की संभावना होती है। ऐसी स्थिति में रेस्क्यू पैराशूट महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है और उन्हें सुरक्षित स्थान पर उतारता है।

बियॉन्ड विजुअल लाइट ऑफ साइट (बीवीएलओएस) संचालन के लिए 30 किलोग्राम से अधिक वजन वाले ड्रोन के लिए पैराशूट रेस्क्यू सिस्टम का उपयोग अनिवार्य होता है।

अमर उजाला एक्सक्लूसिव

मैन कैरिंग पैराशूट। स्रोत : आर्काइव

पहली बार दक्षिण अफ्रीकी देशों को मैन कैरिंग पैराशूटों का किया गया निर्यात

ड्रोन रेस्क्यू पैराशूट। स्रोत : आर्काइव

बढ़ रहा निर्यात, निर्यातक देश भी बढ़ रहे

कंपनी की इकाई ओपीएफ में लड़ाकू विमान सुखोई, हॉक, मिग-29 के ब्रेक पैराशूट के अलावा पायलट और मैन कैरिंग पैराशूट के साथ ही रबर उत्पाद फ्लोट आदि का उत्पादन किया जाता है। निर्माणी के उत्पादों की सबसे बड़ी खरीदार देश की सेनाएं ही रही हैं। अब निगमीकरण के बाद से निर्माणी के बने उत्पाद निर्यात भी होने लगे हैं। 2022-23 में केवल 1.5 करोड़ का निर्यात किया गया था। 2023-24 में 19 करोड़ के करीब निर्यात किया। 2024-25 में 20 करोड़ से ज्यादा का निर्यात हुआ है। मलयेशिया, वियतनाम, इंडोनेशिया, तुर्केमेनिस्तान, पोलैंड में निर्यात हो रहा है। दक्षिण अफ्रीकी देशों को मैन कैरिंग पैराशूट पसंद आए हैं। जल्द और आर्डर मिलने की संभावना है।

भार के अनुसार ड्रोन के लिए बनाएंगे रेस्क्यू पैराशूट

“2030 तक देश को ड्रोन उद्योग में अग्रणी बनाने को लेकर काम किया जा रहा है। जीआईएल ने अलग-अलग भार वर्ग वाले ड्रोन के लिए पैराशूट रेस्क्यू पैराशूट विकसित करने की रूपरेखा तैयार की है। बंगलूरू में हुए एयरो इंडिया शो में उच्च भार वाले ड्रोनों को रेस्क्यू के संबंध में कई पूछताछ हुई थी। कंपनी ने दक्षिण अफ्रीकी मित्र राष्ट्रों को पहली बार मैन कैरिंग पैराशूटों का निर्यात किया है। **-एमसी बालासुब्रमणियम, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक (सीएमडी), जीआईएल**